International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science (IJEMMASSS)
ISSN : 2581-9925, Impact Factor: 6.882, Volume 04, No. 03(I), July - September, 2022, pp. 129-132

प्रशिक्षणार्थियों के मानवीय मूल्यों का अकादमिक तनाव के संदर्भ में अध्ययन

ओमप्रकाश महर्षि*

प्रस्तावना

समाज का प्रतिबिम्ब, दर्शन के द्वारा होता है, जबकि समाज दर्शन के अनुरूप मूल्यों का निर्धारण होता है। मूल्य ही मानव को उत्कर्ष की ओर ले जाते है। मूल्य मानव जीवन में श्रद्धा, विश्वास, प्रतिबद्धता, प्रेरणा आदि उदात्त भावों का संचरण करते है। मूल्यों के द्वारा ही जगत की संरचना होती है तथा उसकी व्यवस्था सुचारू रूप से चलाने में सहायक होते हैं। शाश्वत मूल्य सदैव यथावत रहते हैं जबकि समसामाजिक मूल्यों में परिवर्तन होता रहता है। अतः मूल्य के सम्प्रत्यय से यह स्पष्ट होता है कि मूल्य एक अमूर्त समप्रत्यय है तथा व्यक्ति के व्यवहार को निर्देशित एवं नियंत्रित करते है। ये समाज द्वारा पूर्णतः स्वीकार होते है। मूल्यों के द्वारा ही समाज में विश्वास, आदर्श, आस्था व श्रद्धा, नैतिक नियम एवम् व्यवहार के मानदण्ड निर्धारित किये जाते हैं। मूल्यों का कम या अधिक महत्व मानव की इच्छा पर निर्भर होता है। व्यक्ति इनमें से कुछ को अधिक महत्व देते हैं, कुछ को अपेक्षाकृत कम जैसे 'अहिंसा' का मूल्य जैन धर्म द्वारा स्वीकृत चरम लक्ष्य माना जाता है। जिसको सामाजिकरण की प्रक्रिया द्वारा बच्चे ग्रहण करते है।

मूल्य अनुभव मूलक होते है। ये मनुष्यों द्वारा उनके अनुभवों के आधार पर स्वीकृत किये जाते है इस प्रकार के मूल्य युग–युग के अनुभव का परिणाम होते है। साथ ही साथ यह मूल्य परिवर्तन शील होते है। मनुष्य अपने सामाजिक क्रियाओं में भाग लेते हुए सीखते है तथा धारण करते रहते है। मूल्यों द्वारा ही किसी समाज की पहचान की जाती है तथा प्रत्येक समाज अपने मूल्यों की रक्षा करता है। उदाहरणार्थ–एक जापानी स्कूली छात्र से प्रश्न किया गया कि शत्रु तुम्हारे राष्ट्रीय ध्वज तथा धर्म पताका दोनों पर एक साथ आक्रमण करे तो तुम पहले किसकी रक्षा करोगे ? उसका उत्तर था पहले राष्ट्रीय ध्वज की। अतः स्पष्ट होता ह कि उसके द्वारा अपनाये गये मानदण्ड मे राष्ट्र धर्म से ऊपर था। इसलिए उसने यह विकल्प अनुभव के आधार पर चुना क्योंकि राष्ट्र के बिना धर्म का क्या अस्तित्व रह जाता है। सामाजिक मूल्यों के नैतिकता का भी प्रबल समावेश होता है अतः कभी–कभी नैतिकता तथा उत्तरदायित्व सम्बन्धी मूल्यों में कड़ा संघर्ष होता है, जिसके द्वारा समाज को नवीन दिशा प्रदान की जाती है। समाज के अन्तर्गत नवीन सामाजिक मानदण्डों का उद्‌भव होता है। इस प्रकार समाज शास्त्री सामाजिक मूल्यों का सम्बन्ध सामाजिक आस्था विश्वास, श्रद्धा, नैतिकता, उत्तरदायित्व, सांस्कृतिक मूल्य, शैक्षिक मूल्य, सौन्दर्यपूरक, अनुभव मूलक अनुशासनात्मक मूल्य, प्रयोगात्मक मूल्य आदि के समावेश पर विशेष बल देते हैं।

आमधारणा है कि तनाव मानसिक सन्तुलन बिगाड़ देते हैं। यदि यह दूर न हुआ तो इसके दूरगामी बड़े ही भयंकर परिणाम होते हैं। सभी की इच्छा यही रहती है कि हम मानसिक तनाव के शिकार न हो लेकिन तनाव जीवन का एक हिस्सा है। सामान्य रूप से उत्पन्न तनाव घटनाओं और मनः स्थिति के अनुरूप आता जाता रहता है। लम्बे समय तक बना रहने वाला और अवचेतन मस्तिष्क में समाया तनाव हमारे स्वास्थ्य के लिए हानिकारक होता है। तनाव हमेशा हानिकारक नहीं होता है। कुछ होने के लिए या उपलब्धि के लिए कुछ मात्रा में तनाव आवश्यक भी है।

* पी–एचडी. (छात्र), शिक्षा विभाग, श्री कौशलदास विश्वविद्यालय, पीलीबंगा, हनुमानगढ़, राजस्थान।

तनाव के लिए मुख्यत यही धारणा है कि यह शरीर के लिए एवं मानसिक स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है। लेकिन प्रत्येक प्रकार का तनाव शरीर के लिए हानिकारक नहीं होता। किसी भी क्षण व्यक्ति तनाव की स्थिति में आ सकता है। तनाव आता है और चला जाता है तो ज्यादा भयंकर नहीं होता। एक प्रषासक यह मानता है कि अगर तनाव नहीं तो हम अपने अधीन काम करने वालों को अपने नियन्त्रण में नहीं रख सकते। हमें तो कुछ आवेष भी दिखाना पड़ता है और गुस्सा भी दिखाना पड़ता है। ऐसा मान लिया गया है कि तनाव सामान्य स्तर पर होता है तो समस्या नहीं बनता किन्तु जो आदत तनाव के कारण पड़ जाती है व बढ़ जाती है तो समस्या गहराती चली जाती है। लेकिन सामान्य तनाव क्रिया करने की प्रेरणा देता है। उदाहरणार्थ जब व्यक्ति को भूख लगती है तब उसमें तनाव उत्पन्न हो जाता है। उसकी भूख जितनी अधिक होती है उतना ही अधिक उसमें तनाव होता है। यह तनाव उसे भोजन की खोज करने के लिए क्रियाशील बनाता है। जब उसे भोजन मिल जाता है। और वह अपनी भूख शान्त कर लेता है। तब वह सन्तुलित दशा में आ जाता है और उसमें उत्पन्न होने वाला तनाव समाप्त हो जाता है। तनाव का असर कुछ व्यक्तियों पर कम और कुछ पर अधिक होता है। उपर्युक्त सभी बातों का अध्ययन करने के पश्चात शोधकर्ता इस निर्णय पर है कि प्रस्तुत समस्या पर शोध नितांत आवश्यक है क्योकि इस विषय पर आज तक बहुत ही अध्ययन कार्य हो पाया है।

अध्ययन का महत्व एवं आवश्यकता

आज ज्ञान व विज्ञान में प्रगति हो रही है। वैज्ञानिकों, प्रौद्योगिकों, चिकित्सकों, साहित्यकारों एवम् समाजिक कार्यकर्त्ताओं की उपलब्धियों सन्तोषजनक रही है। फिर भी मानव के जीवन मूल्यों में आस्था डगमगा गयी है। विश्वास लुप्त हो रहा है तथा नैतिकता का समाज से अन्त सा प्रतीत होने लगा है यह सब सामाजिक मूल्यों के हास के कारण हुआ है। आज सामाजिक मूल्यों की बहुत आवश्यकता है ताकि समाज एक सकारात्मक आदर्श जीवन व्यतीत करें, इन मूल्यों का महत्व समझे तथा समाज को एक नयी सद्भाव की भावना से प्रेरित करे। अतः मूल्यों की आवश्यकता को इस प्रकार से स्पष्ट किया जा सकता है।

वैज्ञानिक अध्यात्मवाद पर बल– वर्तमान में वैज्ञानिक भौतिकवाद पर अधिक बल प्रदान किया जा रहा है। वैज्ञानिक चमत्कारों की चकाचौंध में मानव खो गया है, जो एक क्षणिक सुख प्राप्ति के साधन मात्र बनकर रह जाते हैं। उससे मानव की ज्ञान क्रांति कुण्ठित हो गयी है। डॉ. राधा कृष्णन के शब्दों में "आज का मानव वैज्ञानिक भौतिकवाद के सहारे दानव होता जा रहा है जबकि वैज्ञानिक आध्यात्मवाद के अभाव में बौना होता जा रहा है।" अतः स्पष्ट है कि वैज्ञानिक आध्यात्मवाद ही ज्ञान क्रान्ति का आधार है। आध्यात्म एक गतिशील प्रभाव है, जो व्यक्ति के जीवन के प्रत्येक भाग व पहलू को विकसित करता है। इसी के परिणाम स्वरूप सामाजिक मूल्यों का विकास होता है। साथ ही प्रेम व अनुराग, शान्ति, संतोष, सुखी–जीवन, सौन्दर्यात्मक, बौधात्मक नैतिक एवम् आध्यात्मिक मूल्यों का विकास होता है। ये मूल्य ही समाज को नवीन रूप प्रदान करने में सहायक होते है, ये मूल्य मानव व समाज के लिये निम्नलिखित रूपों में सहायक है– 1. सामाजिक समानता के विकास में सहायक, 2. स्वतंत्र एवम् सम्पन्न समाज बनाने में सहायक, 3. भ्रातृत्व भाव उत्पन्न करने में सहायक, 4. जनकल्याण एवम् राष्ट्रीयता की भावना लाने में सहायक, 5. ज्ञान क्रान्ति लाने में सहायक।

- **मानवीय संवेदनाओं एवम् चरित्र के विकास में सहायकः** वास्तव में शिक्षा का अन्तिम लक्ष्य 'चरित्र' का विकास करना है। यह सामाजिक मूल्यों के द्वारा ही किया जा सकता है इसके विकास में सार्वभौमिक मूल्यों सत्य, सदाचार, प्रेम, शांति तथा अहिंसा का एक यौगिक योगदान होता है। इन्हीं मूल्यों से राष्ट्रीय चरित्र, राष्ट्रीय बोध, राष्ट्रीय एकता की भावना, राष्ट्र प्रेम, आन्तरिक समरसता, सामाजिक स्वीकरण, संशक्तिकरण, सुरक्षा, शान्तिमय समाज की सीापना आदि का विकास होता है।
- **समाज में आध्यात्मिक जागरूकता के विकास में सहायकः** सामाजिक मूल्यों द्वारा ही समाज में आध्यात्मिक जागरूकता लायी जाती है इनके अभाव में समाज का अस्तित्व ही क्षीण होने लगता है। अच्छे एवम् समुचित मूल्यों द्वारा सामाजिक एकता, सामाजिक उत्तरदायित्व की भावना, समुचित सम्मान, आध्यात्मिक घनिष्ठता, क्षमाशीलता, धार्मिक, नैतिकता, मानववाद, सार्वभौमिक प्रेम, राष्ट्रीय संचेतना, सहिष्णुता, सामाजिक न्याय आदि का विकास होता है।

- **मानव को उत्कर्ष की ओर ले जाने में सहायकः** वस्तुतः सामाजिक मूल्य ही मानव को उत्कर्ष की ओर ले जाने में सहायक होते हैं। उसके जीवन में श्रृद्धा, प्रेम, सत्य, अहिंसा, शान्ति, सन्तोष, विश्वास, प्रेरणा, प्रतिबद्धता आदि भावना का संचरण करते है। जीवन को संचालित करने तथा व्यक्तित्व को बनाये रखने में सहायक होते हैं।

समस्या कथन

''प्रषिक्षणार्थियों के मानवीय मूल्यों का अकादमिक तनाव के संदर्भ में अध्ययन''

अध्ययन के उद्देश्य

एकीकृत पाठ्यक्रम के प्रशिक्षणार्थियों के मानवीय मूल्यों एवं अकादमिक तनाव में परस्पर सहसम्बन्ध का अध्ययन करना।

अध्ययन की परिकल्पनाएँ

एकीकृत पाठ्यक्रम के प्रशिक्षणार्थियों के मानवीय मूल्यों एवं अकादमिक तनाव में परस्पर कोई सहसम्बन्ध नहीं होता है।

अध्ययन का परिसीमन

प्रस्तुत शोधकार्य का क्षेत्र राजस्थान के बीकानेर संभाग को रखा गया है।

इस शोधकार्य में न्यादर्श के रूप में एकीकृत पाठ्यक्रम के प्रशिक्षणार्थियों (4 वर्षीय पाठ्यक्रम) को सम्मिलित किया गया है।

न्यादर्श में कुल 400 प्रशिक्षणार्थियों (छात्र 200 + छात्राएँ 200) को सम्मिलित किया गया है।

शोधविधि

प्रस्तुत अध्ययन में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है क्योंकि अनुसंधान की यह एक वैज्ञानिक विधि है। इस विधि द्वारा प्राप्त निश्कर्श वैध एवं विष्वसनीय होते हैं।

अध्ययन में प्रयुक्त उपकरण

- **मानवीय मूल्य**

प्रस्तुत शोधकार्य हेतु, प्रशिक्षणार्थियों के मानवीय मूल्य को ज्ञात करने के लिए डॉ. जी.पी.शैरी द्वारा प्रमापित मापनी को आधार माना गया है।

- **अकादमिक तनाव**

प्रस्तुत शोधकार्य हेतु, प्रशिक्षणार्थियों के अकादमिक तनाव को ज्ञात करने के लिए डॉ. करियाकाऊ एवं शटक्लिप द्वारा प्रमापित मापनी को आधार माना गया है।

- **अध्ययन में प्रयुक्त सांख्यिकी**

प्रस्तुत शोध अध्ययन में प्रयुक्त सांख्यिकी मध्यमान (M), प्रमाणिक विचलन (SD) एवं सहसम्बन्ध की गणना की गई है।

- **समंकों का सारणीयन एवं विश्लेषण**

प्रस्तुत शोधकार्य में अनुसंधानकर्ता ने संकलित एवं व्यवस्थित आंकड़ों का विष्लेशण जिस प्रकार किया है, उसका परिकल्पनानुसार विवरण निम्न प्रकार है –

तालिका 1: प्रशिक्षणार्थियों के मानवीय मूल्यों एवं अकादमिक तनाव के प्राप्तांको के मध्य सहसम्बन्ध की गणना

मापनियाँ	संख्या (N)	सहसम्बन्ध मान
मानवीय मूल्य	200	-0.008
अकादमिक तनाव	200	

उपर्युक्त तालिका में प्रशिक्षणार्थियों के मानवीय मूल्यों एवं अकादमिक तनाव के प्राप्तांकों के मध्य सहसम्बन्ध की गणना की गई है जिसके अनुसार सहसम्बन्ध गुणांक –0.008 है अर्थात् निम्न ऋणात्मक सम्बन्ध पाया गया है।

प्रस्तुत अध्ययन की शैक्षिक उपयोगिता

प्रस्तुत शोध छात्र–छात्राओं के मानवीय मूल्य को प्रभावित करने वाली मनोदशाओं यथा – शैक्षिक दबाव, अध्यापन अभिवृत्ति, संज्ञानात्मक क्षमता एवं सामाजिक पर्यावरण के स्तर को सुधारने में सफल सिद्ध हो सकता है।

प्रस्तुत शोध शिक्षक–शिक्षार्थी के मध्य मधुर सम्बन्धों के निर्माण में शिक्षकों में सकारात्मक सोच उत्पन्न करने में सहायक हो सकता है।

प्रस्तुत शोध शिक्षकों की अपने अध्यापन क्षेत्र के प्रति अभिवृत्ति को बढ़ाकर एवं सन्तुष्टि उत्पन्न कर तथा वचनबद्ध बनाने में सहायक सिद्ध होगा।

निष्कर्ष

विद्यार्थियों के मानवीय मूल्य एवं अकादमिक तनाव में कोई सहसम्बन्ध नहीं है। इस संदर्भ में उक्त परिकल्पना स्वीकृत की जाती है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. गुप्त, नत्थूलाल (2000). *मूल्य परक शिक्षा और समाज.* नई दिल्लीः नमन प्रकाशन. पृष्ठ –122
2. गौड़, अनिता (2005). *बच्चों की प्रतिभा कैसे निखारे.* नई दिल्लीः राज पाकेट बुक्स. पृष्ठ संख्या–14
3. चतुर्वेदी, त्रिभुवननाथ (2005). *पारिवारिक सुख के लिए हैः किशोर मन की समझ.* नई–दिल्लीः श्रीविजय इन्द्र टाइम्स अंक–8, पृष्ठ संख्या–25
4. चौबे, सरयू प्रसाद (2005). *शिक्षा मनोविज्ञान.* मेरठः इण्टरनेशनल पब्लिकेशन हाऊस. पेज न.184
5. चौहान, एस.एस. (1996). *सर्वांगीण बाल विकास.* नई दिल्लीः करोल बाग. आर्य बुक डिपो. पेज प. 591
6. जायसवाल, सीताराम (1994). *शिक्षा मनोविज्ञान.* नई दिल्लीः करोल बाग. आर्य बुक डिपो मंदिर
7. ढोढियाल, एस. पाठक (1990). *शैक्षिक अनुसंधान का विधिशास्त्र.* जयपुरः राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी. पृष्ठ संख्या–51
8. पाठक, पी.डी. (2007). *शिक्षा मनोविज्ञान.* आगराः विनोद पुस्तक मन्दिर. पृ.सं. 245, 552,450
9. पारीक, प्रो. मथुरेश्वर (2005). *उदीयमान भारतीय समाज एवं शिक्षा.* जयपुरः शिक्षा प्रकाशन. पेज 22

❖◆❖